© 2025 IJRTI | Volume 10, Issue 4 April 2025 | ISSN: 2456-3315

विद्यार्थियों की सामाजिक एंव आर्थिक,पृष्ठभूमि पर कोविड–19 का प्रभाव

डॉ.बादाम सिंह गंगवार[1]
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
जागरण स्कूल ऑफ लॉ,
देहरादून, उत्तराखंड
badamsingh83@gmail.com

डॉ. कल्पना[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीतिक विज्ञान विभाग
जागरण स्कूल ऑफ लॉ,
देहरादून, उत्तराखंड
kalpanapahiwal@gmail.com

डॉ नीलम उपाध्याय[3]
असिस्टेंट प्रोफेसर
विधि विभाग
जागरण स्कूल ऑफ लॉ,
देहरादून, उत्तराखंड
10neelamupadhyay@gmail.com

सार

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 11 मार्च, 2020 को कोरोना वायरस रोग 2019 COVID–19 को एक महामारी और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया। वैश्विक स्तर पर, 22 दिसंबर 2021 तक, लगभग 275 मिलियन मामले और 5.4 मिलियन मौतें हुई हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से हमने जिस सबसे चुनौती पूर्ण संकट का सामना किया है, वह COVID-19 महामारी वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित कर रही है, बदले में, सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की ओर ले जाती है। यह सर्वविदित है कि प्रकोप के साथ आने वाली कई आर्थिक, सामाजिक *समस्याएं जीवन से जुड़ी होती हैं और इन अवधियों के बाद भी लंबे समय तक बनी रह सकती हैं। नतीजतन, COVID -19 महामारी के कारण स्कूल स्तर के छात्रों और सभी व्यवसायों पर सामाजिक एंव आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित लोगों पर सामाजिक प्रभाव पड़े। इन समस्याओं के कारण सामाजिक एंव आर्थिक संकट का अनुभव किया है। इस आबादी में सामाजिक एंव आर्थिक समस्याओं का मूल्यांकन और प्रबंधन छात्र–केंद्रित समर्थन प्रणाली के प्रमुख तत्व होने चाहिए।*[4]

मुख्य शब्द – कोविड़–19, जीवनशैली, आर्थिक, सामाजिक , विद्यार्थी

परिचय

चीन कोरोना वायरस बीमारी (COVID-19) का पता लगाने वाला पहला देश था। 11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित किया। 27 जनवरी 2020 को COVID–19 का पहला मामला भारत के केरला में पाया गया। भारत में जनसंख्या का घनत्व पूरे देश में COVID-19 को फैलाने का एक अन्य कारक है। उसके बाद, यह भारतमें एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य परेशानी बन गया है। इंस्टीट्यूट ऑफ एपिडेमियोलॉजी डिजीज कंट्रोल एंड रिसर्च (IEDCR) के अनुसार, 3 मई 2020 तक, कुल 10 हज़ार से भी ज्यादा मामले भारत में भी सुनिश्चित किए गए थे, जहां कई लोगों की मौत हुई थी और कई लोगों को COVID-19 से बचाया गया था।

---

[1] डॉ.बादाम सिंह गंगवार, एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, जागरण स्कूल ऑफ लॉ, देहरादून, उत्तराखंड
[2] डॉ. कल्पना ,राजनीतिक विज्ञान विभाग, जागरण स्कूल ऑफ लॉ, देहरादून, उत्तराखंड
[3] डॉ नीलम उपाध्याय ,असिस्टेंट प्रोफेसर, विधि विभाग, जागरण स्कूल ऑफ लॉ, देहरादून, उत्तराखंड
[4] कोविड का छात्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डॉ अर्चना वर्मा एसोसिएट प्रोफेसर साइकोलॉजी डिपार्मेंट डी जी (पी.जी.) कॉलेज कानपुर

COVID-19 के जबरदस्त प्रसार के कारण, भारत में लोगों को सामाजिक एंव आर्थिक रूप से प्रभावित कर रहा है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कोरोना वायरस के संक्रमण से इंसानों में' मनोवैज्ञानिक भटकाव' बढ़ गया है। खासकर लोगों में कोरोना से सवंमित होने का डर, आस–पास के लोगों के संक्रमण का खतरा, मौत का डर, आजीविका को लेकर अनिश्चितता और आर्थिक संकट तनाव पैदा करते हैं। कोरोनरी हृदय रोग के रोगियों, बेघर लोगों और आपात स्थिति में घर से बाहर जाने वाले पेशेवरों को मानसिक स्वास्थ्य का सबसे अधिक खतरा होता है। इसके अलावा, कई लोग पहले ही COVID-19 महामारी के दौरान घबराहट और अवसाद के कारण आत्महत्या कर चुके हैं। शोध से यह भी पता चला है कि यह मानसिक संकट कोरोना काल में अपने चरम पर पहुंच गया था। ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी सिडनी विश्वविद्यालय द्वारा सह–आयोजित सर्वेक्षण 14 मई 2020 को प्रकाशित किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि कोरोनरी हृदय रोग का मानसिक स्वास्थ्य और मनोविज्ञान पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। जैसे–जैसे COVID-19 देश भर में तेजी से फैला, यह देश में वयस्कों, पेशेवरों, फ्रंट–रनर और अन्य रोग ग्रस्त लोगों सहित आमजनता के लिए चिंता का विषय बन गया है।

साहित्य समीक्षा

डॉ. कविता की एन. एवं अर्शिया के एस. (2020) द्वारा लिखित लेख 'भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोविड–19 का प्रभाव' जो नवम्बर 2020 में इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियेटिव रिसर्च थाट्स में प्रकाशित हुआ। इसके माध्यम से यह अवगत होता है कि कोविड–19 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत समस्या पैदा की है।

गुप्ता एवं गोपलानी (2020) ने यू.जी.सी. केयर जनरल में प्रकाशित लेख 'भारत में शैक्षणिक संस्थानों पर कोविड–19 का प्रभाव' में इस बात पर जोर दिया है कि सरकार के द्वारा कोविड–19 संक्रमण के असर को कम करने के लिए जो महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गये हैं वे सराहनीय है। सरकार ने स्कूलों को समय रहते बन्द कर दिया जिससे संक्रमण को तेजी से हो रहे फैलाव को रोका जा सके।

जेना (2020) ने उन्नत शिक्षा ओर अनुसंधान के अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित शोध पत्र जिसका शीर्षक 'भारत में उच्च शिक्षा पर कोविड–19 का प्रभाव' में अध्ययन किया और पाया गया कि कोविड–19 ने दुनियाभर में 4–5 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित किया। देशभर के लगभग सभी शिक्षण संस्थान पाँचों, चरणों में बंद रहे और शैक्षणिक गतिविधियों को शुरू करने की कभी कोई छूट नहीं मिली। इस प्रकार कोविड–19 संक्रमण ने शिक्षा के क्षेत्र पर महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभाव डाला।

चक्रवर्ती मित्तल, गुप्ता यादव अरोरा (2020) द्वारा सम्पादित शीर्षक 'कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर छात्रों की राय' जो नवम्बर 2020 में प्रकाशित हुआ में लेखकों ने पाया कि शिक्षा लंबे समय से हाशिए पर है। कोविड–19 महामारी ने इसे मुख्यधारा बना दिया है। छात्रों ने वर्तमान परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षा को एक व्यवहार्य विकल्प माना। हालांकि यह लगता है कि सुधार की गुंजाइश है।

चतुर्वेदी कुनाल, विश्वकर्मा कुमार दिनेश और सिंह निधि (2020) द्वारा लिखित लेख 'शिक्षा पर कोविड–19 एवं इसका प्रभाव' छात्रों का सामाजिक जीवन एवं मानसिक स्वास्थ्य : एक सर्वेक्षण' जिसे

बायोमिट्रिक शोध प्रयोगशाला, तकनीकी सूचना विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। इस अध्ययन में यह पता चलता है कि कोविड–19 का आरम्भ होने से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं दिनचर्या पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

ठाकुर प्रीती (2020) द्वारा लिखित लेख 'शिक्षा व्यवसाय पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव' जिसे इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में 2020 के संस्करण में प्रकाशित किया गया। इसके अध्ययन से यह अवगत होता है कि कोविड–19 के समय स्कूल, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों को बंद करने से विद्यार्थियों के सीखने में रुकावट हुई और योग्यताएं प्राप्त करने के लिए गहन मूल्यांकन एवं सार्वजनिक मूल्यांकन को भी बाधित किया जा रहा है।

चौकस एवं अग्रवाल (2021) द्वारा लिखित शोध लेख 'भारत में कालेज के छात्रों पर मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव' जो सन् 2021 में प्रकाशित हुआ। इस लेख में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की गई है। इस अध्ययन में पाया गया कि 61 प्रतिशत कालेज के छात्रों को कोविड–19 ने प्रभावित किया है।

खान, नवी, खोजों ताहिर (2021) ने 'भारत में कोविड महामारी के दौरान ई–लर्निंग के प्रति छात्रों की धारणा : एक अनुभवजन्य अध्ययन' लेख जो सन् 2021 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक द्वारा कोविड–19 महामारी के दौरान ई–लर्निंग के प्रति छात्रों की धारणा कैसी है? वे इसके बारे में क्या सोचते हैं, इसका विस्तृत अध्ययन किया गया है। इस लेख के अध्ययन से ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षकों को छात्रों के साथ जुड़ने की अधिक स्वतंत्रता होती है और स्थान तथा समय की सुविधा होती है।

कनौजिया (2021) 'कोविड–19 महामारी के दौरान छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव' लेख जो नवम्बर 2021 में प्रकाशित हुआ में छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा का कैसे प्रभाव पड़ा, इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है तथा इसका कैसे प्रभाव पड़ा इस बारे में भी अध्ययन किया है। इन्होंने इस शोध लेख में पाया कि ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन इसके परिणामों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

गोप (2021) ने 'कोविड–19 महामारी में भारत में उच्च शिक्षा : चुनौतियों एवं अवसर' जो सन् 2021 में ई.डी.टेक रिवयू, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ में लेखक ने इस अध्ययन में पाया कि 60 प्रतिशत से अधिक छात्र ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था के पक्ष में है और घर पर रहकर ही शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। वहीं 81.4 प्रतिशत छात्र ऑफलाइन के पक्ष में है। शिक्षण के ऑनलाइन व ऑफलाइन मोड के बावजूद व्यावहारिक या प्रोजेक्ट आधारित पाठयक्रम का सुझाव दिया।

डॉ. मदान पूनम[5] **(2021)** द्वारा लिखित लेख 'भारतीय शिक्षा पर कोविड–19 का प्रभाव'। यह लेख इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ हयूमिनटीज एण्ड इण्टरडिसिप्लनरी स्टडीज द्वारा 2021 में प्रकाशित किया गया। इसके शोध से ज्ञात होता है कि इस महामारी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली पर हर हाल में शैक्षणिक दृष्टिकोण में बदलाव किया है तथा शिक्षा के सभी स्तरों पर आभासी शिक्षा की शुरूआत का अवसर पैदा किया है।

शोध समस्या

कोविड संक्रमण से समाज में सबसे ज्यादा प्रभावित वर्ग विद्यार्थी रहे है। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं पर कोविड–19 संक्रमण का खासा गहरा प्रभाव पड़ा है। विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक जीवन शैली पर कई प्रभावों को देखा गया।

कोविड–19 का विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति पर प्रभाव

कोविड–19 महामारी के संकट से जूझ रहे इस दौड़ में सामाजिक संबंध प्रभावित हुए हैं। एक ओर जहाँ संकटकालीन दौर में आपसी सहयोग, सौहार्द, विश्वास, संवाद, और सांस्कृतिक मूल्यों को बल मिला है। तो वहीं दूसरी ओर कई चुनौतियाँ भी पैदा हुई है। और साथ ही साथ वास्तविक विश्व आभासी के बीच अनायास के जीवन में सामाजिक सामंजस्य के संतुलन को भी बल मिला है।[6] इस आधार पर कहा जा सकता है कि कोविड–19 महामारी ने सामाजिक संबंधों की परिभाषा को बदलकर रख दिया था। वहीं दूसरी ओर खान–पान के तरीकों में भी बदलाव देखने को मिला है। साथ –साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी बदलाव देखने को मिला है। कोविड–19 महामारी के समय व्यक्ति एक दूसरे से बात करने में घबरा रहा था कहीं कोरोना हमें न हो जाये। लॉकडाउन और शारीरिक दूरी के उपाय जो कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने और जीवन को बचाने के लिए आवश्यक है कोविड–19 दौरान देखने में आया कि ज्यादातर लोगों में, लंबे समय तक एक दूसरों से बातचीत में कभी आई। जिसे कहीं ना कहीं पड़ोसियों से संबंधों में फक्र पड़ा। लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया और संबंधों में स्थिरता आ गई।

कोविड–19 का विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा छात्रों से भरा हुआ है। कोविड–19 के कारण शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने के लिए छात्र अपने घरों में कैद हो गए थे। और समय–समय पर बढ़ते लॉकडाउन के समय से वे विभिन्न प्रकार की सामाजिक एंव आर्थिक समस्या से पीड़ित हो रहे थे। उनकी आर्थिक स्थिति के कारण कम आय, ट्यूशन की कमी है और कई लोगों की नौकरी चली गई है और बेरोजगारी दर बढ रही है, जिसके परिणामस्वरूप उनका मानसिक स्वास्थ्य बाधित हो गया है।

कोविड–19 संक्रमण ने पूरे विश्व भर में लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला। सभी व्यवसायों एवं पृष्ठभूमि से सम्बन्धित लोगों पर सामाजिक प्रभाव पड़े। हालांकि विद्यार्थियों के जीवन पर कोविड–19 संक्रमण का बहुत अधिक प्रभाव देखने को मिला। चूँकि कोविड–19 संक्रमण के दौरान विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा और अभिभावकों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन से उनके बच्चों की सामाजिक स्थिति पर भी प्रभाव पड़ने सुनिश्चित थे। अभिभावकों एवं उनके बच्चों में परस्पर सम्बन्धों में परिवर्तन आये और अभिभावकों की सामाजिक स्थिति प्रभावित होने से उनके बच्चों पर प्रभाव पड़ने भी निश्चित थे।

---

5 Associate Prof. Head, Department of Miscasting Management Faculty of Commerce, JB (P.G.) College Panipat CIT, GLS University, Ahmedabad, India

6 नई दुनिया न्यूज नेटवर्क, 19 अक्टूबर (2020), दैनिक जागरण

अनुसंधान कार्य प्रणाली

अनुसंधान कार्य प्रणाली अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु बनायी गई एक रूपरेखा होती है, जिससे की शोध कार्य अपने निश्चित उद्देश्य को क्रमवार वर्णित कर सके।[7] यह शोध पत्र प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर किया है। जिसमें सरकारी एवं निजी इण्टर कालेज जो यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध है। कक्षा 9वीं से 12वीं तक के अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर कोविड–19 संक्रमण के पड़ने वाले शैक्षिक, सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक प्रभावों का परीक्षण किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए तथ्य संकलन का कार्य साक्षात्कार विधि के द्वारा किया गया है। शोध कार्य पूर्ण करने हेतु यथा सम्भव सहभागी अवलोकन का भी सहारा लिया गया है। साक्षात्कार अनुसूची प्रविधि एवं, निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में सभी प्रश्न व्यवस्थित एवं विशेष क्रम में रखे है। एवं सूचनादाताओं से भेंट करके विषय से सम्बन्धित उनके विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा उनके आन्तरिक जीवन को जानने का प्रयास किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में प्रत्येक प्रश्न के दो एवं तीन विकल्प दिये है– "हॉ, नहीं तथा जानकारी नहीं। साक्षात्कार अनुसूची में डाले गये प्रश्न शोध विषय को पूरी तरह दर्शाते है या नहीं, इसके लिए साक्षात्कार अनुसूचि का प्रतिभागियों पर परीक्षण किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है।

कोविड–19 संक्रमण का विद्यार्थियों के सामाजिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

कोविड–19 संक्रमण का विद्यार्थियों के आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

तथ्य संकलन के स्रोत

(क) प्राथमिक स्रोत– प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता द्वारा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उत्तरदाताओं से तथ्य संकलित किये गये है ।

(ख) द्वितीयक स्रोत– द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, साहित्यों, लेखकों के विचारों, सरकारी एवं गैर सरकारी आकड़ों का प्रयोग किया गया है।

समग्र एवं न्यायदर्श का चुनाव

शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा सामान्य दैव निर्दशन विधि के माध्यम से उ0प्र0 के बरेली जनपद के अर्न्तगत आने वाले सरकारी एवं निजी इण्टर कालेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जो यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध है। वर्तमान अध्ययन के लिए सरकारी एवं निजी इण्टर कालेज में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं को बतौर शोध समग्र लिया है। बरेली जनपद की कुल 6 तहसीलों में बने सरकारी एवं निजी इण्टर कालेज में से 1200 छात्र/छात्राओं का चयन शोध के लिए किया गया है। प्रत्येक तहसील से 100 छात्र एवं 100 छात्राऐं चुनें है। इस प्रकार शोध अध्ययन के लिए कुल 1200 छात्र/छात्राओं का चयन 6 तहसीलों से किया है। 6 तहसीलों से विद्यार्थियों को सामान्य दैव निदर्शन प्रक्रिया द्वारा चुना गया है। विद्यार्थियों का चयन पाठशालाओं के कार्यालयों द्वारा उपलब्ध कराये गये विद्यार्थियों की संख्या में से किया गया है। सरकारी एवं निजी इण्टर कालेज जो यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध है।

---

[7] आहूजा, राम (2010), *सामाजिक अनुसंधान,* जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स।

विश्लेषण और निष्कर्ष

तालिका १.१ उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय पार्श्वचित्र

विद्यार्थियों की लैंगिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	600	50
छात्राऐं	600	50
योग	**1200**	**100.0**
विद्यार्थियों की आयु (वर्षों में)	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
14—15	736	61.3
16—17	373	31.7
18—19	84	0.7
योग	**1200**	**100.0**

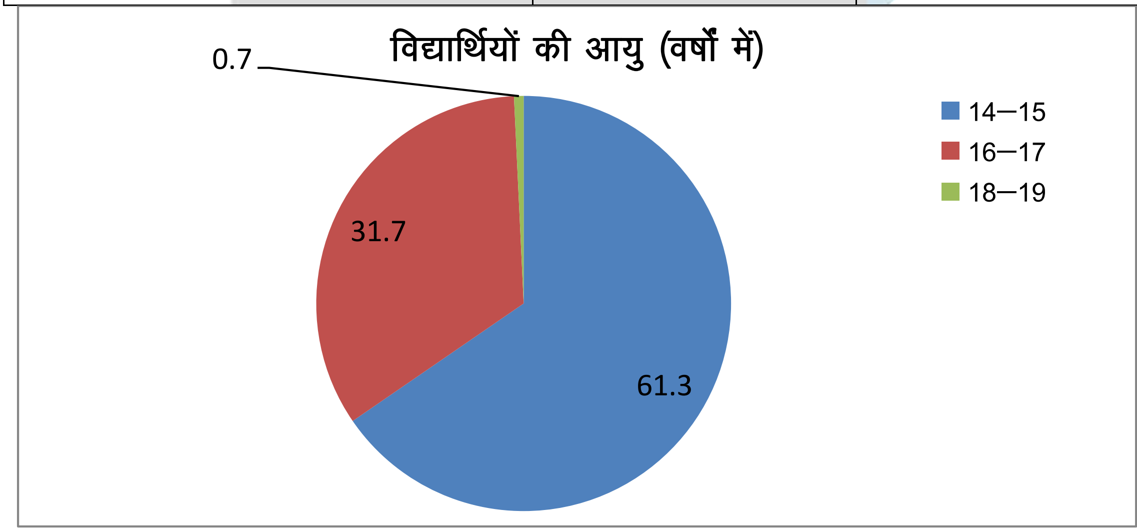

विद्यार्थियों का शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
9वीं	233	19.4
10वीं	799	66.6
11वीं	108	9.0
12वीं	60	5.0
योग	**1200**	**100.0**

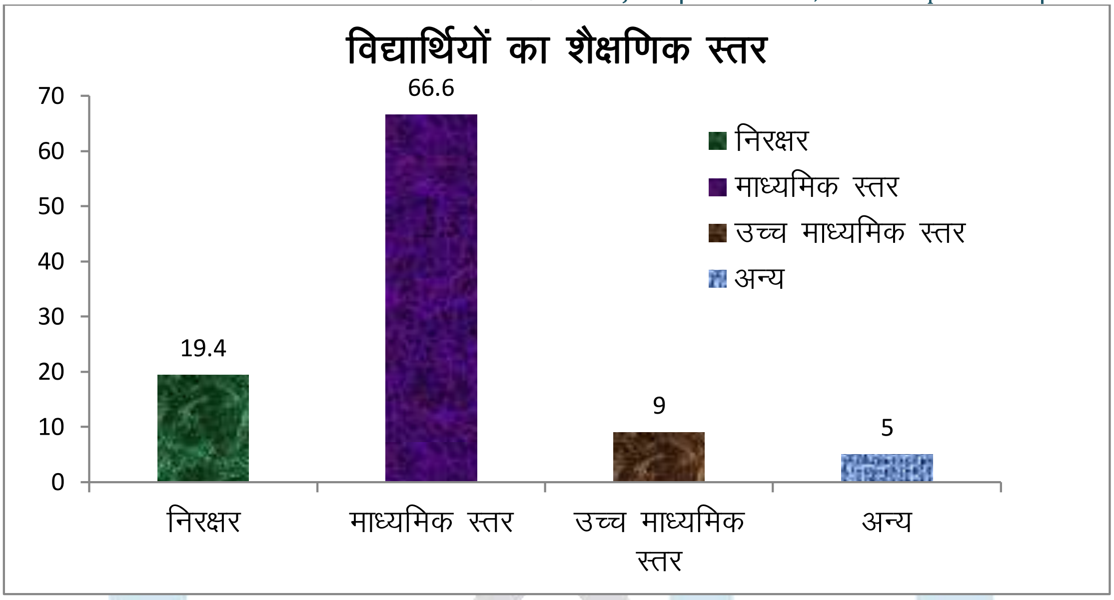

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय पार्श्वचित्र का वर्णन करती है। कि 50 प्रतिशत उत्तरदाता छात्राऐं हैं जबकि 50 प्रतिशत उत्तरदाता छात्र है। अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है। शोध क्षेत्र में कुल 1200 उत्तरदाताओं को शोध हेतु चुना गया है। उत्तरदाताओं को तीन आयु वर्गो में पृथक् किया गया है। इसमें प्रथम वर्ग में 14–15 वर्ष के छात्र एंव छात्राओं को चयन किया गया है। जिनका प्रतिशत 61.3 है। द्वितीय वर्ग में 16–17 वर्ष के छात्र एंव छात्राओं को चयनित किया गया है। जिनका प्रतिशत 31.7 है तृतीय वर्ग में 18–19 वर्ष आयु वर्ग के छात्र एंव छात्राओं को चयनित किया गया है। जिनका प्रतिशत 0.7 है। इसी सार में कह सकते है कि सर्वाधिक आयु वर्ग वाले उत्तरदाता 14–15 वर्ष के है।अतः निष्कर्ष निकला है कि विद्यार्थियों के बीच कम उम्र का कारण केवल इंटर कॉलेज के स्तर के विद्यार्थियों का चयन है। अतः विद्यार्थियों की उम्र कम होना तर्कसंगत है।

तालिका 1 उत्तरदाताओं के शैक्षणिक पार्श्वचित्र का वर्णन करती है कि सबसे ज्यादा प्रतिशत दसवीं कक्षा के उत्तरदाताओं की हैं, जो 66.6 प्रतिशत है। 19.4 प्रतिशत नवी कक्षा के उत्तरदाता है। सबसे कम उत्तरदाताओं का प्रतिशत 5.0 है जो 12वीं कक्षा से है। इसी प्रकार 11वीं कक्षा से 9 प्रतिशत उत्तरदाता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक प्रतिशत दसवीं कक्षा के उत्तरदाताओं का है जो कोविड–19 से प्रभावित हुए हैं।

तालिका 2. वर्णनात्मक आँकडें

सहपाठियों / माता–पिता / रिश्तेदारों द्वारा उन्हें हेय दृष्टि से देखने सम्बन्धी विचार	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	220	18.3
नहीं	764	63.7

जानकारी नहीं	216	18.0
योग	**1200**	**100.0**
कोविड–19 के दौरान अभिभावकों की आय सृजित करने में हुई कठिनाई संबंधी विचार	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
हाँ	950	79.1
नहीं	250	20.9
योग	**1200**	**100.0**
कोविड–19 के दौरान पड़ोसियों से संबंधों में परिवर्तन संबंधी विचारों का विश्लेषण	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
हाँ	609	50.8
नहीं	587	48.5
जानकारी नहीं	09	0.8
योग	**1200**	**100.0**

तालिका 2 में दिखाया गया है कि 63.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें उनके सहपाठियों, माता–पिता, रिश्तेदारों द्वारा हेय दृष्टि से नहीं देखा गया जबकि 18.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जब वह कोविंड–19 संक्रमण से संक्रमित हुए तब उन्हें उनके सहपाठियों/माता–पिता/ रिश्तेदारों द्वारा हेय दृष्टि से देखा गया। वही 18.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया हमें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता कि ज्यादातर 63.7 उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें हेय दृष्टि से नहीं देखा गया।

तालिका 2 में दिखाया गया है कि 79.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके माता–पिता को आय सृजन करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। जबकि 29 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि कि उनके अभिभावकों को आय सृजित करने में कोई परेशानी नहीं हुई।

अतः निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि ज्यादातर विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अभिभावकों को कोविड–19 के दौरान आय सृजित करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

क्योंकि कोविड–19 के दौरान व्यवसाय पूरी तरह से चौपट हो गया था। कई विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अभिभावकों की नौकरी चली गई जिससे परिवार का पेट पालना मुश्किल हो गया था।

तालिका 2 के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया है कि कोविड–19 के दौरान उनका पड़ोसियों से संबंधों पर फक्र पड़ा है। जबकि 48.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि कोविड–19 संक्रमण के दौरान संबंधों पर कोई फक्र नहीं पड़ा। 0.8 प्रतिशत ने कहा इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया है कि कोविड–19 के दौरान उनका पड़ोसियों से संबंधों पर फक्र पड़ा है। क्योंकि कोविड–19 के दौरान उनका किसी भी पड़ोसियों अथवा सगे संबंधियों के यहाँ आना–जाना पूरी तरह से बंद हो गया था। जिससे सामाजिक संबंधों पर प्रभाव देखने को मिला।

निष्कर्ष

COVID–19 महामारी ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। इस महामारी ने हर क्षेत्र के लोगों को प्रभावित किया। उपरोक्त अनुसंधान चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि कोविड–19 संक्रमण का विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों पर गहरा सामाजिक, आर्थिक प्रभाव पड़ा। कोविड–19 विश्व महामारी के रूप में वर्ष 2019 में उजागर हुआ। यह महामारी चीन के गुहान शहर से उत्पन्न हुई एवं बहुत कम समय में विश्व के हर देश एवं प्रांत में फैल गई पूर्ण कोविड–19 महामारी से विकसित एवं विकासशील देशों में हजारों की तादाद में लोगों की मौतें हुई ,वहीं दूसरी ओर इससे भी ज्यादा लोग संक्रमण की चपेट में आने से बीमार हुए।

कोविड–19 संक्रमण ने जहाँ तक एक ओर विकसित एवं विकासशील देशों की चिकित्सा संबंधी सुविधाओं का रहस्यों उद्‌घाटन किया, वहीं इस और लोगों की सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, एवं मानसिक अवस्थाओं पर गहरा कोठारा घात किया। इस वैश्विक महामारी को जड़ से समाप्त करने के लिए सरकारों ने वैक्सीन तैयार करने एवं लॉकडाउन एवं कवांरटाइन के माध्यम से लोगों की आवाजाही पर ब्रेक लगाने का भरपूर कोशिश की। विश्व की सरकारें इस महामारी को पूरी तरह से रोकने में असक्षम रही। भारत में भी कोविड–19 महामारी का गहरा प्रभाव देखने मिला। महामारी से निपटने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा कई शासनादेश जारी किए गऐ, जिससे लोगों की सामाजिक, आर्थिक, एवं दैनिक दिनचर्या, प्रभावित हुई।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

RESEARCH PAPERS

- परवीन, डॉ. नाज; (2020) *कोरोना महामारी और शिक्षा : शिक्षा को बचाने की चुनौती समाज के सामने अगला* । संकट; सितम्बर 23, ; अमर उजाला।

- Agarwal, P. (2006), *"Higher education in India: The need for change"*, New Delhi, Indian.
- Amber, (2020), Murrey Steven Puttick, Farhana Sultana. *Digitizing critical pedagogies in higher education during Covid -19.*
- Baafi, (2020), R.K.A. *School physical environment and student academic performance*. Adv. Phys. Educ. 2020, 10, 121–137.
- Cooperman, L. (2017), *The Art of Teaching Online: How to Start and How to Succeed as an Online Instructor*. Netherlands: Chandos publication.
- Data Highlights, (2011), Census 2011, *Rural Urban Distribution of population*, Registrar, General and Census Commissioner, Ministry of Home Affairs, New Delhi, India: 15th July, 2011.
- Jena, P. K. (July, 2020). *IMPACT OF PANDEMIC COVID- 19 ON EDUCATION IN INDIA*, International Journal of Current Research Vol. 12, Issue, 07, pp.12582-12586.
- Jena, P. K. Dr. (May 2020). *Online learning during lockdown period for covid-19 in india, international journal of multi-disciplinary educational research*. ISSN:2277-7881; impact factor:6.514(2020); ic value:5.16; ISI value:2.286 peer reviewed: volume:9, Issue:5(8).

BOOKS HINDI

- आहूजा, राम (2010), *भारतीय समाज,* जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स।
- आहूजा, राम (2010), *सामाजिक अनुसंधान,* जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स।
- एच. के, (1994), कपिल : *अनुसंधान विधियाँ,* प्रकाशक कचहरी घाट, आगरा, अष्टम् संस्करण।
- बॉटोमोर, टी.बी : *समस्याओं और साहित्य का अध्ययन,* ग्रंथ शिल्पी दिल्ली।

MAGAZINES

- *कुरूक्षेत्र*
- *इंडिया टूडे*
- *योजना*
- *प्रतियोगिता दपर्ण (हिन्दी मासिक)*

WEBSITES

- https://www.cowin.gov.in
- https://aiamswp.org.in/journal/
- www.aiamsup.org.in
- www.who.nit
- www.indiastatics.com
- https://www.icmr.gov.in
- https://www.mohfw.gov.in/pdf/Covid-19 pdf.
- https://egpg.inflibnet.ac.in